E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

भारत की क्रांतिकारी चेतना के प्रतीक जतिन दास के प्रेरक व्यक्तित्व का ऐतिहासिक अध्ययन

[1]प्रवीन कुमार, [2]डा. राघवेन्द्र यादव

[1]पी-एच.डी.शोधार्थी, इतिहास विभाग,हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,धर्मशाला

[2]सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

:DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.14510031

शोध सार

1857 की क्रांति भारतीयों द्वारा स्वतंत्रता हेतु किया गया प्रथम प्रयास था जो अपनी असफलता के बावजूद भी भारतीयों में स्व-जागरण की लहर पैदा करने में पूर्णत सफल हुई । जिसको आधार बनाकर भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का मार्ग प्रशस्त किया गया । यह बताना आवश्यक है की क्रांतिकारी युवाओं ने समुचित शासन व्यवस्था का विरोध किया था जो अन्याय और शोषण पर आधारित थी । क्रांतिकारी जतिन दास भी एक प्रेरक तत्व की भांति भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में नजर आए थे । क्योंकि भारतीय क्रान्तिकारी आत्म बलिदान के लिए सदैव तैयार रहते थे। जिस कारण क्रान्तिकारी आन्दोलन व्यापक रूप धारण करता चला गया। देश के नौजवान स्वतः ही उनके आदर्शों, विचारों और कार्यविधि की तरफ आकर्षित होते गऐ। क्रान्तिकारियों की निडरता व बहादुरी पर लिखा भी गया है -

बेधड़क टकरा गऐ दुश्मन-ए-सफ्फाक से,

कांप उठा साम्राज्य इस जुर्रते बेबाक से,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

संकेत शब्द – स्व जागरण, काकोरी केस,लाहौर षड्यंत्र, जतिन दास ।

प्रस्तावना

विदेशी सता से भारत को मुक्त करवाने के लिए भारतीयों द्वारा अनेक तरह के आंदोलन चलाए गए जिनमे से कुछ हिंसक थे तो कुछ अहिंसक । जिनका एक ही उद्देश्य था भारत को किसी भी कीमत पर ब्रिटिश हुकूमत से स्वतंत्रता प्राप्त करवाना । इन सभी आंदोलनो में यदि ध्यान से नजर डालें तो भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा ही ब्रिटिश साम्राज्य का असली चरित्र और चेहरा भारतीय जनता के समक्ष रखा गया था । भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन की जन्म भूमि बेशक महाराष्ट्र मानी जाती है किंतु कर्मभूमि यदि बंगाल को माना जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि बंगाल के नौजवानों ने क्रांतिकारी आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी । लेकिन आज भी भारत में अनेक ऐसे क्रांतिकारी है जिनके द्वारा किए गए कार्य को भारतीय इतिहास में वह स्थान नहीं मिल पाया है जिसके असलीयत में अधिकारी थे । क्रांतिकारी जतिन दास ऐसे ही एक भारतीय नौजवान थे जिनकी शहादत न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक बनी बल्कि उन्होंने सैकड़ो भारतीयों को क्रांति के मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित भी किया था ।जिन्होंने अपने अल्प जीवन काल में राष्ट्रवाद का एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करके भारतीयों में स्वतंत्रता और राष्ट्र प्रेम की भावना पैदा की थी ।[1]

क्रांतिकारी जतिन दास का जन्म कोलकाता के एक कायस्थ परिवार में 27 अक्टूबर 1904 को हुआ था ।[2] जिनका स्थानीय लोगों के बीच एक सम्मानित स्थान था क्योंकि उनका परिवार लोगों के दुख को अपना समझ कर उनकी हर संभव सहायता करने का प्रयास करता था । परिवार में जतिन का बचपन भी एक बहुत ही सामान्य ढंग से व्यतीत हुआ था लेकिन उनका व्यक्तित्व किसी को भी अपनी तरफ आकर्षित कर सकता था । इसी संदर्भ में शिव वर्मा ने अपनी किताब में लिखा था कि, "दास बहुत गंभीर, शांत अल्प किन्तु मृदुभाषी स्वभाव के व्यक्ति थे यद्यपि वह बहुत कम बोलते थे लेकिन फिर भी उनके व्यवहार में एक ऐसा आकर्षण था । जिसके कारण लोग जल्दी ही उनसे घुल मिल जाते थे ।[3] जतिन के पूर्वजो को अपना पैतृक निवास छोड़कर कोलकाता में जाकर रहना पड़ा था क्योंकि उनके पैतृक निवास पर ब्रिटिश साम्राज्य ने गोला बारूद बनाने

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

हेतु कारखाना स्थापित कर दिया था। यह घटना जतिन के मन में इस गहराई से बैठ चुकी थी कि उन्होंने प्रण लिया कि जिस प्रकार उन्हें अपने मूल निवास से बाहर निकला गया था ठीक उसी प्रकार वह भी एक दिन ब्रिटिश शासन को भारत से खेदेड देंगे। बाल्यावस्था से ही जतिन के अंदर दृढ़ संकल्प, ऐश्वर्या विराग और कठोर सहनशीलता जैसे गुणों का समावेश हो गया था।[4]

जिसको आधार बना कर बचपन से ही जतिन दास ने अपने जीवन का उद्देश्य तय कर लिया था। अपने पिता व दादा की प्रेरणादायक शिक्षा सभी रास्ता बनाने में कारगर साबित हो रही थी। स्वामी विवेकानंद का वाक्य द्व जतिन दास के उपर सटीक बैठता है । उन्होंने कहा था कि, "हमें ऐसे बहादुरों की आवश्यकता है जो हाड मांस से नही अपितु फौलाद से बने हो जिनकी संकल्प शक्ति अडिग और अजय हो।"[5] वहीं इसी बीच 1905 में बंगाल के राष्ट्रवाद को तोड़ने हेतु सरकार द्वारा उसका विभाजन कर दिया गया जिसके परिणाम स्वरुप ब्रिटिश शासन के खिलाफ व्यापक विरोध प्रदर्शन आरंभ हो गए। जिस पर अरविंदो घोष ने लिखा बंगाल विभाजन को भारत में अब तक हुए सबसे बड़े अफसर के रूप में देखा जाना चाहिए।[6] इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि बंगाल विभाजन के बाद उपजा आंदोलन ब्रिटिश साम्राज्य की नींद हिलाने हेतु काफी था। इन दोनों बंकिम चंद्र का आनंद मठ, अरविंद घोष की भवानी मंदिर बंगाल के साथ-साथ संपूर्ण भारत में व्यापक रूप से पढ़ी जाने लगी किताबों में एक थे जो क्रांतिकारी विचारों को बढ़ावा देकर देने में कारगर सिद्ध हो रही थी।[7] समकालीन लेखो सर्वाधिक भाषणों से बंगाल विभाजन की मंशा का अंदाजा लगाया जा सकता था। इसी के साथ खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चौकी, सत्येंद्र नाथ बोस और जतिन मुखर्जी आदि की क्रांतिकारी गतिविधियों की प्रेरणादायक कहानियों से जतिन दास का व्यक्तित्व स्वतंत्रता की तरफ बढ़ता जा रहा था।[8] वही सरकार किस प्रकार भारतीय क्रांतिकारियों को अपनी मंशा में असफल करने के लिए अनेक तरीके अपना रही थी। इसी कोशिश में सरकार का विचार था कि भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन अंग्रेजी राज के लिए घातक न बने इसलिए सर सिडनी रोलेट की अध्यक्षता में एक कानून पास किया गया जिसे क्रांतिकारी और अराजक अपराध एक्ट 1919 में कहा जाता है।[9] यह बिल बंगाल महाराष्ट्र तथा पंजाब की क्रांतिकारी गतिविधियों पर लगाम लगाने हेतु बनाया गया था यहां बताना आवश्यक है कि बंगाल को अन्य सभी प्रति की अपेक्षा इस रिपोर्ट में सबसे ज्यादा जटिल प्रांत बताया गया था।[10] (**मोस्ट कॉम्प्लिकेटेड प्रोविंस**)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

इस अराजक और काले बिल का देश भर में विरोध हुआ जिसमें जतिन दास ने चितरंजन दास के साथ मिलकर सक्रिय भूमिका निभाई। अप्रैल 1919 की एक सभा में उन्होंने कहा क्योंकि विधेयक स्वतंत्रता के खिलाफ है और मैं इसका प्रबल विरोध करता रहूंगा।[11] वही अमृतसर में एक विशाल जनसभा जो शांतिपूर्ण ढंग से आयोजित की जा रही थी, पर अप्रैल 1919 को अंग्रेज अधिकारी डायर ने गोलियां चलवा कर सैकड़ो भारतीयों को शहीद कर दिया। सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक मरने वालों की संख्या 379 थी। लेकिन वास्तव में आंकड़ा बहुत ज्यादा था इस हत्याकांड के विरोध में गांधी ने 'केसर हिंद' और रविंद्र नाथ टैगोर ने 'सर' की उपाधि वापस कर दी।

ब्रह्मदत्त नासिर ने विरोध करते हुए इस प्रकार लिखा कि -

अब तो है अपने सूद औ जिया पर नजर मुझे,
वह दिल लग गए जब लबों पर मेरे जी हुजूर था।[12]

इस हत्याकांड का विरोध इतना प्रबल हुआ कि गांधी जी ने असहयोग आंदोलन चलाने का आह्वान किया जिसमें चितरंजन दास,मोतीलाल नेहरू के साथ-साथ भगत सिंह, योगेश चंद्र, भगवती चरण, यशपाल के साथ जतिन दास ने भी भूमिका अदा की थी।[13] असहयोग आंदोलन के दौरान विरोध प्रदर्शन के समय जतिन दास को गिरफ्तार किया गया जो उनकी पहली गिरफ्तारी थी।[14] इसके पश्चात जैसे ही जतिन दास घर पहुंचे तो पिता बंकिम बिहारी दास ने कहा, "अगर तुम्हें यही सब करना है तो जो मेरे घर से निकल जाओ मैं समझ लूंगा कि तुम मेरे लिए मर गए हो।" इसका उत्तर देते हुए जतिन दास ने कहा, " मेरी शिक्षा प्रतीक्षा कर सकती है पर स्वाधीनता एक पल भी इंतजार नहीं कर सकती इसलिए मैं अपने रास्ते पर ही चलूंगा।"[15]

इधर चौरा चौरी में हिंसक घटना के कारण गांधी जी ने देशव्यापी आंदोलन वापस ले लिया जिसके परिणामस्वरूप उनकी देशभर में निंदा आरम्भ हो गई। सुभाष चंद्र बोस ने इस कार्य की तुलना राष्ट्रीय दुर्भाग्य से की।[16] वहीं भारतीय नौजवानों ने महसूस किया कि शांति के साधनों को छोड़कर हिंसक गतिविधियों द्वारा भारत की स्वतंत्रता का मार्ग तय करने हेतु 1924 में एक क्रांतिकारी संगठन हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन की स्थापना की। क्योंकि गांधी जी के विचारों से क्रांतिकारी नौजवानों का विश्वास उठ चुका था। यहां बताना आवश्यक है कि सान्याल पहले ही गांधी जी पत्र लिख में बता चुके थे कि भारतीय क्रांतिकारी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

सशस्त्र क्रांति द्वारा भारत माता की मुक्ति को संभव बनाने का प्रयास करेंगे। इन सब गतिविधियों में जतिन दास भी नजर आ रहे थे क्रांतिकारी संगठन के नियमों में उद्देश्यों के लिए सचिंद्रनाथ सान्याल ने सरकार विरोधी दो लेख लिखे। जिनमे एक 'पीला पर्चा ' दूसरा ' क्रांतिकारी' जो संपूर्ण देश एक समय पर में जतिन दास के माध्यम से ही बांटा गया था।[17]

इन क्रांतिकारी लेखों में सान्याल ने भारतीयों से आह्वान किया था कि सभी देशवासियों को एक साथ मिलकर ब्रिटिश सरकार का विरोध करना चाहिए ताकि जल्द से जल्द भारत को विदेशी हुकूमत से छुड़ाया जा सके। इसके अतिरिक्त क्रांतिकारी शिव वर्मा ने अपनी पुस्तक में बताया कि "हिंदुस्तान रिपब्लिकन संघ के लिए जतिन का दूसरा मुख्य योगदान धन और हथियारों का प्रबंध करवाना था जिसके लिए उन्होंने यूरोपीय फॉर्म में छोटी-छोटी डकैतियां डालकर 6 माउजर पिस्टल खरीद कर रामप्रसाद बिस्मिल के पास बनारस भेज दिया गया था ताकि यदि कोई भावी योजना बनाई जाए तो इन हथियारों का भरपूर प्रयोग किया जा सके।[18] जतिन दास ने एक बार फिर इंडो-बर्मा पेट्रोलियम कंपनी के पैसों पर सेंध लगा दी जहां से 3000 रुपये की बरामदी की गई। लेकिन फिर भी क्रांतिकारी संगठन के लिए पैसों की आवश्यकता पूर्ण नहीं हो पा रही थी लिहाजा क्रांतिकारियों ने 9 अगस्त 1925 को काकोरी स्टेशन पर रेलवे विभाग का खजाना लूटने की योजना को पूर्ण का सफलता से अंजाम दिया गया और जहां से 4500 रुपए प्राप्त किए गए।[19] काकोरी प्रकरण में क्रांतिकारियों द्वारा जिन हथियारों का प्रयोग किया गया था वह जतिन दास द्वारा ही भेजे गए थे। काकोरी घटना के पश्चात एक व्यापक छापेमारी आरंभ की गई। क्योंकि यह एक शर्म की बात थी कि इतनी कड़ी सुरक्षा के बाद भी क्रांतिकारी इतनी बड़ी घटना को अंजाम देकर सफलता से निकल गए। इस छापेमारी के दौरान रामप्रसाद बिस्मिल तथा अन्य 40 क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन राजेंद्र लहरी का चंद्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर थे। लेकिन राजेंद्र लहरी कोलकाता में दक्षिणेश्वर बम कारखाने में गिरफ्तार कर लिए गए। जहां पर छिपने के लिए जतिन दास ने मदद की थी। उसी समय जतिन दास भी दक्षिणेश्वर बम कारखाने में मौजूद थे लेकि जतिन दास चकमा देख कर भागने में सफल हुए थे।[20] इस प्रकार काकोरी की व्यापक गिरफ्तारियां होने से क्रांतिकारी गतिविधिय कुछ समय के लिए भारत में थम सी गई थी। लेकिन बंगाल में जतिन दास भूमिगत होकर क्रांतिकारी आंदोलन को नये सिरे से आरम्भ करने

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

की योजना बना चुके थे। जिसके तहत उनकी व्यापक ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों से बंगाली युवा उनके साथ जुड़ने आरंभ हो गए। क्योंकि जतिन ब्रिटिश सरकार की असलियत भारतीय जनता के समक्ष रख रहे थे। धीरे-धीरे उनका एक दल तैयार हो रहा था जो भावी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए रणनीति बनाने हेतु कार्य कर रहा था। इसी बीच सरकार ने उनको बंगाली अध्यादेश 1818 के तहत नजरबंद कर दिया। जो असेंबली में जे.ऍम. सेन गुप्त ने विरोध करते हुए कहा हम 1818 के कानून के दुरुपयोग और बंगाल अध्यादेश के निरंकुश अधिनियम एवं निषेधात्मक गिरफ्तारी की निंदा करते हैं जिस कारण बंगाल में रोष लगातार बढ़ता जा रहा है।[21]

लेकिन सरकार किसी भी तरह जतिन दास की नज़रबंदी समाप्त नहीं करना चाहती थी क्योंकि उनका मानना था जतिन फिर से क्रान्तिकारी आन्दोलन को आगे बढ़ाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभायंगे। इसके पश्चात उनको मेदिनीपुर जेल में रखा गया ताकि भारतीय जनता की सहानुभूति को जतिन दास से दूर किया जा सके। मेदिनीपुर जेल में जतिन दास को अकारण परेशान करना आरंभ कर दिया। जतिन भी अपने अधिकारों के लिए जिस तरह निडरता से बाहर रहते हुए शासन का विरोध करते थे। ठीक उसी प्रकार जेल में उन्होंने उसी साहस का परिचय दिया जिस कारण जेलर ने जतिन से बाकायदा माफी भी मांगी थी। उधर भगत सिंह तथा अन्य क्रांतिकारी लगातार भारत की मुक्ति हेतु संघर्षरत थे उन्होंने तय किया कि सरकार की प्रत्येक नीति एवं कानून का हर स्तर पर पुरजोर किया जाएगा। किसी कड़ी में साइमन कमीशन के आगमन के विरोध प्रदर्शन के दौरान लाला लाजपत राय को ब्रिटिश अधिकारी ने लाठियां से घायल कर दिया जिसके कारण 17 नवंबर 1928 को लाल जी का देहांत हो गया इस घटना के पश्चात पूरा देश स्तब्धरह गया क्रांतिकारी ही इस कृत्य का बदला लेने के लिए सक्षम थे 17 दिसंबर 1928 को भगत सिंह और अन्य क्रांतिकारियों ने सांडर्स की हत्या के द्वारा लाल जी की शहादत का बदला ले लिया।[22]

भगत सिंह पुलिस की नजर से बचते हुए कोलकाता जा पहुंचे जहां पर उन्होंने जतिन दास से बम बनाने का प्रशिक्षण देने की बात की जिसके परिणामस्वरुप आगरा में भगत सिंह,जतिन दास शिव ,वर्मा आदि क्रांतिकारियों ने 15 फरवरी 1929 को बम बनाने की ट्रेनिंग आरंभ कर दी। इसी बीच असेंबली में दो अन्य कानून को पास किए जाने की मुहिम ब्रिटिश हुकूमत द्वारा चलाई जा रही थी जिसके द्वारा क्रांतिकारी एवं

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

मजदूरों के अधिकारों के दमन करने का प्रावधान करना था तो भारतीय क्रांतिकारी इन कानून को किसी भी तरह से पास नहीं होने देना चाहते थे। वहीं दूसरी तरफ क्रांतिकारी आंदोलन को एक नया आयाम देने के लिए असेंबली में बम गिराने के साथ साथ की गिरफ्तारी देकर देश का ध्यान अपनी तरफ करने का यह सुनहरा मौका क्रांतिकारियों को दिखाई दे रहा था इसी कड़ी में 8 अप्रैल 1929 को असेंबली में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बम के धमाकों के द्वारा बहरी बनी ब्रिटिश सरकार को जगाने का काम किया जो आगरा में जतिन दास तथा अन्य साथी क्रांतिकारियों द्वारा बनाए गए थे। इसके पश्चात दोनों क्रांतिकारियों ने खुद को पुलिस के हवाले कर दिया।[23]

इस घटना के पश्चात पुलिस किसी भी तरह नाकाम नहीं होना चाहती थी लिहाजा अन्य क्रांतिकारी साथियों की तलाश में दिन रात एक कर दिया गया-। जिसके कारण सुखदेव को लाहौर से जतिन दास को कोलकाता से गिरफ्तार कर लिया गया इन क्रांतिकारी साथियों पर सामूहिक रूप से लाहौर लाहौर षड्यंत्र के नाम से मुकदमा चलाया गया जिसमें भगत सिंह, सुखदेव, शिववर्मा, जतिन दास आदि का नाम शामिल किया गया था।[24] क्रांतिकारियों ने एक रणनीति के तहत जेल को ही अपना रण क्षेत्र बनाने की बात की क्योंकि क्रांतिकारी साथियों का विचार था कि वह बाहर हो या जेल में शासन की गलत नीतियों का विरोध करना उनका अधिकार है लिहाजा क्रांतिकारियों ने भूख हड़ताल 13 जुलाई 1929 को आरंभ की गई थी।[25]

वहीं क्रांतिकारियों की हड़ताल से वातावरण उग्र होने लगा जिसमे सरकार की कड़ी शब्दों में निंदा आरंभ हो गई। लेकिन सरकार किसी भी तरह पीछे हटने को तैयार नहीं थी। बल्कि अंग्रेजी राज के अधिकारियों ने क्रांतिकारियों के साथ अमान्य व्यवहार करना आरंभ कर दिया उनका अनसन समाप्त करने के लिए किसी भी हद जाने के लिए सरकार आमादा हो गई थी। यह बताना आवश्यक है कि क्रांतिकारियों को भूख हड़ताल के दौरान मूंह में नली द्वारा उनका अनसन तुडवाने की कोशिश आरंभ कर दी। जिस कारण जतिन दास की तबीयत बिगड़ने आरंभ होगी क्योंकि उनके फेफड़ों में दूध चला गया था। वहीं अपने अनशन के 63वें दिन 13 सितंबर 1929 को दोपहर 1:05 पर भारत के महान सपूत की शहादत हो गई।[26] उसकी शहादत को समकालीन चित्रों में भारत माता की गोद में **'अनंत नींद'** के रूप में दर्शाया गया शहादत के पश्चात जिस प्रकार जतिन जीवित रहते हुए ब्रिटिश सरकार घातक साबित हो रहे थे।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

ठीक उसी प्रकार जतिन दास का बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को नई दिशा व दशा देने में कामयाब हुआ था चरम सीमा भारत की स्वतंत्रता के साथ 1947 में देखी जा सकती है

निष्कर्ष में बताया जा सकता है कि जतिन दास ने बचपन से ही अपने जीवन का लक्ष्य भारत माता की स्वतंत्रता को बनाया था जिसको स्वयं के बलिदान से प्राप्त करवाने में कामयाबी भी हुए थे । बेशक जतिन दास भारत की स्वतंत्रता को अपनी आँखों से नही देख पाए मगर उन्होंने करोड़ों भारतीय जनता के दिलों में रहते हुए उसका आनंद लिया था । उन्होंने अपना अनशन शुरु करने से पहले ही कहा था मेरे अनशन का अर्थ ही जीत या मौत है । इस तरह जतिन दास भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए वास्तव में एक प्रेरक तत्व की भांति ही थे जिस तरह ऋषि दधिची ने खुद का बलिदान करके देवासुर संग्राम में देवताओं को विजयी कराया था । ठीक उसी प्रकार जतिन दास ने अंग्रेजी राज से भारत माता की गुलामी को समाप्त करवाने में आधुनिक समय में दधिची की भूमिका निभाई थी।[27]

संदर्भ ग्रन्थ

1. किरण चन्द्र दास, *अमर शहीद जतिन दास*, हरियाणा लोक सम्पर्क, प्रकाशन विभाग, चण्डीगढ़, 1980, पृ. 15
2. एम.एम. जुनेजा, *मृत्युविजयी यतीन्द्रनाथ दास*, मोडर्न पब्लिसर्स, मोहाली, 2013, पृ. 27
3. शिव वर्मा, *संस्मृतियां*, राहुल फाऊण्डेशन, लखनऊ, 2020, पृ. 139
4. जुनेजा, *मृत्युविजयी यतीन्द्रनाथ दास* , पृ. 27

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

5. दास, *अमर शहीद जतिन दास*, पृ. 16
6. गिरीजा शंकर राय चौधरी, *श्री अरिविन्दो बांग्लार स्वदेशी युग*,नवभारत प्रकाशन,कलकत्ता.1958, पृ. 369
7. हितेन्द्र पटेल, *खुदीराम बोस अद्भुत क्रान्तिकारी*, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, नई दिल्ली, 2008, पृ. 19
8. दास, *अमर शहीद जतिन दास*, पृ. 16
9. डब्ल्यू.एच. हेल, *ब्रिटिश रिकार्ड ऑफ रिवोल्यूशनरी मूवमेण्ट इन इण्डिया*, वाल्यूम-3, यूनिस्टार बुक्स प्रा.लि.मोहली 2017, पृ. 14
10. *सेडीसन कमेटी रिपोर्ट*, 1918, भारत सरकार, पृ. 5
11. हेमेंन्द्र नाथ दास गुप्ता, *देशबन्धु चितरंजन दास*, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, नई दिल्ली, 1960, पृ. 40
12. सतीश चन्द्र मित्तल व प्रशान्त गौरव, *जलियांवाला बाग नरसंहार - एक ऐतिहासिक विश्लेषण*, प्रकाशन विभाग, , नई दिल्ली, 2019, पृ. 67
13. मनमथनाथ गुप्त, *भारत के क्रान्तिकारी*, पेंगुइन रैण्डम हाऊस इण्डिया प्रा.लि., गुड़गांव, 2012, पृ. 143
14. गुप्त, *भारत के क्रान्तिकारी*, पृ. 143
15. मन्मथनाथ गुप्त, *क्रान्तिकारियों का वैचारिक इतिहास*, निधि प्रकाशन, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, 1980, पृ. 13
16. सुभाष चन्द्र बोस, *द इण्डियन स्ट्रगल-1920-42*, ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, नई दिल्ली, पृ. 179
17. वर्मा, *संस्मृतियां*, पृ. 135
18. वर्मा, *संस्मृतियां*, पृ. 135
19. डब्ल्यू. हेल, *ब्रिटिश रिकार्ड्स ऑफ रिवोल्यूशनरी एक्टीविटी इन इण्डिया* 1917-1936, यूनिस्टार बुक्स प्रा. लि., मोहाली, 2017, पृ. 67
20. *फाईल संख्या 385/1925*, गृह विभाग-राजनीति, भारत सरकार

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

21. सी.एस. वेणु, *जतिन दास द मार्टियर,* एस. चनिया प्रकाशन, मद्रास, 1973, पृ. 21

22. *फाईल संख्या, 4/7/1930*, गृह विभाग,राजनीती ,भारत सरकार

23. असेम्बली बम केस पेपर्स, *फाईल संख्या, 306-III* , भारत सरकार

24. मन्मथनाथ गुप्त, भगत सिंह और उनका युग , लिपि प्रकाशन नई दिल्ली, 1980, पृ. 201

25. वर्मा, *संस्मृतियां,* पृ. 139

26. *फाईल संख्या 21/63/1929* , गृह विभाग-राजनीति, भारत सरकार

27. आदित्य प्रसन्न राय, मृत्युविजयी यतिन्द्रनाथ दास, मॉडर्न प्रकाशन ,मोहाली, 2013, पृ. 49

Citation

प्रवीन कुमार, डा. राघवेन्द्र यादव. (2024). भारत की क्रांतिकारी चेतना के प्रतीक जतिन दास के प्रेरक व्यक्तित्व का ऐतिहासिक अध्ययन. International educational applied research journal, 08(11), 68–75. https://doi.org/10.5281/zenodo.14510031